संकुल विद्यालयों के विकास में विद्यालय प्रमुख की भूमिका पर आधारित मॉडयूल

National centre for School leadership

विद्यालय नेतृत्व अकादमी

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद छत्तीसगढ़ रायपुर – 492007

संरक्षण एवं मार्गदर्शन

श्री राजेश सिंह राणा (आई.ए.एस.)
संचालक
एस .सी .ई .आर .टी .छत्तीसगढ़,रायपुर

डॉ. योगेश शिवहरे
अतिरिक्त संचालक
एसी.सी .ई .आर .टी .छत्तीसगढ़ रायपुर

श्रीमती पुष्पा किस्पोट्टा
उप संचालक
एस .सी .ई .आर .टी छत्तीसगढ़ रायपुर

एवं
श्री रामहरि सराफ
प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान ,कोरबा

समन्वयन

श्री डी .दर्शन
नोडल अधिकारी स्कूल लीडरशीप अकादमी
एस .सी .ई .आर .टी .छत्तीसगढ़ ,रायपुर

माड्यूल लेखन समन्वयक

श्री गौरव शर्मा

लेखक

श्रीमती आभा सिंह
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान पेंड्रा

माड्यूल का शीर्षक- संकुल विद्यालयों के विकास में विद्यालय प्रमुख की भूमिका

मुख्य क्षेत्र - टीम नेतृत्व

उद्देश्य - 1. संकुल की शालाओं में नियमित अध्ययन, अध्यापन सुनिश्चत करना।

2. कुशल मास्टर ट्रेनरों/विशेषज्ञों के साथ समन्वय कर शिक्षकों का सतत क्षमता विकास करना।

3. संकुल की सभी शालाओं पर अकादमिक नियंत्रण रखना एवं उचित मार्गदर्शन देते हुए सुधार करना।

की वर्ड - संकुल परिसर, बेहतर शिक्षा सुविधा, शिक्षकों का क्षमता विकास,शासन की योजनाओं का संचालन,शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार, नवाचार।

परिचय - भारत वर्ष में प्राचीन काल से ही शिक्षा का महत्व रहा है। विद्यालय शिक्षा के केन्द्र बिन्दु हैं। यहीं बच्चों का सही शारीरिक, बौद्धिक ,भावनात्मक एवं रचनात्मक विकास किया जा सकता है और जीवन में बदलाव लाया जा सकता है। विद्यालयों के सफलता पूर्वक संचालन के लिए प्रशासनिक नियंत्रण के साथ अकादमिक नियंत्रण की भी आवश्यकता होती है। एक नियंत्रण कर्ता के अधिकार क्षेत्र मे विद्यालयों की संख्या कम होने पर वह अधिक सफलता पूर्वक कार्य कर सकता है। वर्तमान समय में छत्तीसगढ़ राज्य में एक विकेन्द्रीकृत व्यवस्था लागू कर दी गई है। राज्य मे प्रत्येक हाई स्कूल / हायर सेकेण्ड्री विद्यालयों को शाला संकुल बनाते हुए उन शालाओं के प्राचार्यो को संकुल प्राचार्य का दायित्व सौंपा गया है। प्राचार्यो को उनके संकुल परिसर के पूर्व प्राथमिक से लेकर हायर सेकेण्ड्री स्तर तक के सभी विद्यालयों में अकादमिक गुणवत्ता की जवाबदेही दी गई है। प्रत्येक संकुल मे आठ से दस विद्यालय है उनके सहयोग के लिए प्रत्येक संकुल में संकुल शैक्षिक समन्वयक की नियुक्ति की गई है। ताकि संकुल प्रमुख और शैक्षिक समन्वयक मिलकर अपने क्षेत्र की शालाओं का सतत् अवलोकन करते

हुए संकुल के शिक्षकों का क्षमता वर्धन करेगें और नवाचार हेतु प्रेरित करके आदर्श शाला के रूप में विकसित करेंगे। जिला शिक्षा अधिकारी एवं विकास खण्ड शिक्षा अधिकारी प्रत्येक संकुल को एक इकाई मानकर उसके साथ कार्य करेगें। नई शिक्षा नीति 2020 में शाला संकुल परिसर के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है।

शिक्षा विभाग में बहुत सी योजनाए होती है। जैसे - निःशुल्क गणवेश,पाठय पुस्तक,साइकल वितरण,छात्रवृति वितरण,विभिन्न प्रकार के अनुदान वितरण आदि । इसके क्रियान्वयन के लिए शाला संकुल प्रभावी विकल्प है । जिस प्रकार प्राचार्य विद्यालय का प्रमुख होता है और विद्यालय की सारी गतिविधियाँ उसके आस - पास घूमती रहती है,उसी तरह संकुल व्यवस्था में संकुल प्राचार्य पूरे संकुल का नेतृत्व कर्ता होता है। इसलिए उसे अपने विद्यालय से बाहर निकलकर कार्य करना होगा। उसको अपने कार्य क्षेत्र के सभी संसाधनों को पहचानना होगा और यह भी सुनिश्चित करना होगा कि उन संसाधनों का उपयोग कहाँ - कहाँ तथा कैसे कर पाएंगे। उदाहरण के लिए संकुल में कितने शिक्षक है। सभी समय पर आकर सही तरीके से कार्य कर रहे हैं। कितने विद्यालय और कितनी कक्षाएं हैं। सभी कक्षाओं में सभी विषयों का अध्यापन कार्य हो पा रहा है या नहीं। सुविधाए कौन - कौन सी है जैसे - खेल का मैदान,प्रसाधन की व्यवस्था,पुस्तकालय,बिजली,पानी,इन्टरनेट की व्यवस्था आदि। उन सुविधाओं का उपयोग किया जा रहा है या नहीं | व्यवस्था में कमी होने पर उसे कैसे पूरा किया जा सकता है। शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार के साथ विद्यार्थियों की उपस्थिति पर भी ध्यान देने की अवश्यकता होगी। संज्ञानात्मक विकास के साथ ही सहसंज्ञानात्मक विकास भी आवश्यक है। अतः शैक्षिक गतिविधियों के साथ अन्य गतिविधियाँ संचालित करते हुए बेहतर शिक्षा का विकल्प तैयार किया जा सकता है।

प्र . 1. क्या आपके दृष्टिकोण में विद्द्यालयो के विकास के लिए विद्यालय संकुल योजना उचित कदम है ?

प्र .2 . आप अपने संकुल विद्यालयों के विकास के लिए क्या-क्या करना चाहेंगे ?

मुख्य सामग्री - शालाओं के विकास के लिए संकुल परिसर एक अच्छा विकल्प है। संकुल प्रमुखों को अपने संकुल परिसर में आने वाली सभी शालाओं के मानवीय एवं भौतिक संसाधनों के सही उपयोग के लिए सचेत रहना होगा। पूरे संकुल परिसर को अपना विद्यालय मानकर एक टीम के रूप में कार्य करना होगा।

बेहतर शिक्षा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए ताकि विद्यार्थी अपने पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य सूक्ष्म ज्ञान भी प्राप्त कर सकें। स्वास्थ्य के प्रति सजग हो सकें, अपने समाज से, साथियों से,प्रकृति से गहरी संवेदना के साथ जुड सकें। चरित्र निर्माण हो सके। व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकें तथा व्यवसायिक ज्ञान से जुड़कर आत्मनिर्भर बन सकें। इसके लिए संकुल प्रमुख अपने संकुल में विशेषज्ञों,कलेक्टर,न्यायधीश,पुलिस विभाग के अधिकारी, डॉक्टर,इंजीनियर या अन्य अधिकारियों को बुलाकर उनके विचारों से बच्चों को अवगत करा सकते हैं। कैरियर कांउसलर को बुलाकर कैरियर गाइडेन्स की शिक्षा दी जा सकती है। लोहार,बढ़ई,टेलर, मूर्तिकार एवं कलाकारों आदि को बुलाकर उनके कार्यो की शिक्षा देकर व्यवसाय से जोडने का प्रयास किया जा सकता है। बुलाने की तिथि निश्चित होने पर इसका प्रचार -प्रसार भी किया जाना चाहिए कि अमुक तिथि पर हमारे यहाँ विशेषज्ञ या कलेक्टर आदि आएंगे। ताकि सभी उस विशेष ज्ञान का लाभ ले पाएं।

संकुल में शैक्षिक एवं अन्य गतिविधियाँ सही तरीके से संचालित होती रहें इसके लिए शिक्षकों का सतत् क्षमता विकास करते रहने की आवश्यकता होगी। इस कार्य को करने के लिए संकुल प्रमुखों को अवलोकन करते समय ध्यान देना होगा कि शिक्षको को कहाँ कठिनाई आ रही है। उनसे जानना होगा कि उनकी नीड क्या है? ततपश्चात कुशल मास्टर ट्रेनरों एवं विषय विशेषज्ञों से समन्वय स्थापित कर प्रशिक्षण के माध्यम से कठिनाईयों को हल करते हुए उनका क्षमता विकास किया जा सकता है। उनको प्रोत्साहित किया जा सकता है कि आप अच्छा कर रहें हैं,और अच्छा कर सकते हैं। शिक्षकों के क्षमता विकास के लिए निष्ठा आदि ऑनलाइन कोर्स बनाए गए है,उन्हें भी करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

क्षमता विकास करते रहने से शिक्षकों का मनोबल बना रहता है। प्रोत्साहित करने से समर्पण के साथ कार्य करना उनकी शैली बन जाती है।

विद्यालय में शासन की विभिन्न प्रकार की योजनाओं का संचालन होता है। इनकी जानकारी संकुल प्रमुखों को होनी चाहिए। शालाओं में इनके क्रियान्वयन के लिए अपने संकुल के सभी शालाओं के प्रधान - पाठकों की बैठक आयोजित कर योजनाओं की पूरी जानकारी देनी चाहिए। जमीनी स्तर पर योजनाओं के शत - प्रतिशत क्रियान्वयन हेतु प्रेरित करना चाहिए। स्वयं भी जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया जा सकता है कि योजनाओं का क्रियान्वयन सही तरीके से हो पा रहा है या नहीं। क्या हितग्राहियों को उसका लाभ मिल पा रहा है। योजनाओं के सफलता पूर्वक क्रियान्वयन से उसका लाभ हितग्राहियों तक पहुँचता है और विद्यालय से उनका जुड़ाव बना रहता है।

विद्यार्थियों के शैक्षिक गुणवत्ता मे निरंतर सुधार करते रहना प्रत्येक संकुल प्रमुख का पहला कर्तव्य है। इसके लिए निम्नांकित प्रयास किए जा सकते हैं -

1. विद्यार्थियों को स्वयं करके सीखने की कला में निपुण बनाना होगा और उनमें सतत् सीखते रहने की प्रवृत्ति विकसित करनी होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इस बात का उल्लेख किया गया है। कि ``बच्चे  को जो कुछ सिखाया जा रहा है,उसे तो सीखे ही और साथ ही सतत् सीखते रहने की कला भी सीखे`` सीखने की कला में निपुण बनाने के लिए शिक्षकों द्वारा अपने विषयों को कक्षा में मनोरंजक तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाना चाहिए। विषयों को कला से जोड़कर कक्षा को मनोरंजक बनाया जा सकता है।

2. शालाओं के अवलोकन के दौरान बच्चों से बातचीत के माध्यम से या शिक्षकों से चर्चा करते हुए बच्चो के अधिगम स्तर का पता किया जा सकता है। बच्चे जिन बिन्दुओं में कमजोर है शिक्षकों के बीच चर्चा के माध्यम से उन बिन्दुओं को सरल बनाकर अधिगम स्तर को प्राप्त किया जा सकता है। डिजिटल संसाधनों का उपयोग करने हेतु प्रेरित किया जा सकता है।

3. विषय सामग्री की समझ विकसित करने के लिए विषय से संबंधित सामग्री या पत्र - पत्रिकाओं का उपयोग करने हेतु प्रेरित किया जा सकता है। पुस्तकालय के उपयोग की प्रवृत्ति विकसित करते हुए स्व अध्ययन के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

4. शिक्षक - पालक बैठक आयोजित कर उनके मध्य बच्चों के उपलब्धियों की चर्चा करते हुए उनके कमियों में सुधार करने का सुझाव देते हुए प्रेरित किया जा सकता है। नियमित उपस्थिति हेतु प्रेरणा दी जा सकती है।

5. संकुल स्तर पर शैक्षिक प्रतियोगिताओं का आयोजन करके शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार किया जा सकता है।

6. माताओं का उन्मुखीकरण किया जा सकता है। उनको इन बातों से अवगत कराया जा सकता है कि विद्यालय में अमुक - अमुक गतिविधियाँ होगी और बच्चों को कैसे होम वर्क कराया जा सकता है,उनको घर में पढ़ने के लिए कैसे प्रेरित किया जा सकता है।

शिक्षा में नवाचार की अहम भूमिका होती है। नवाचार बच्चों के सहज विकास की प्रक्रिया के साथ ताल - मेल बिठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सभी शिक्षकों में नवाचार की संभावनाएँ मौजूद होती है। नवाचार को बढावा देने के लिए विद्यालय स्तर एवं संकुल स्तर पर प्रतिस्पर्धाएं आयोजित की जा सकती है। गणित मेला,विज्ञान मेला,कबाड़ से जुगाड प्रदर्शनी आदि का आयोजन किया जा सकता है। इसके माध्यम से अन्य शिक्षकों को भी नवाचार करने की प्रेरणा दी जा सकती है। अच्छी नवाचारी गतिविधियों का संकलन

किया जा सकता हैं। नवाचारी गतिविधियों के माध्यम से सीखने सिखाने की प्रक्रिया को अधिक बेहतर और मनोरंजक बनाया जा सकता है।

चिन्तन के लिए प्रश्न -

प्र. 1. आप अपने संकुल परिसर में कौन - कौन सी प्रतियोगिताओं का आयोजन करते हैं ?

प्र. 2. आप अपने संकुल में नवाचारी गतिविधियों को कैसे बढ़ावा देना चाहेगें ?

प्र. 3. शिक्षको के क्षमता विकास के लिए और क्या –क्या कदम उठाना चाहेंगे ?

सारांश - भारत में कृषि के बाद शिक्षा ही रोजगार का सबसे बड़ा जरिया है। यह देश की अर्थव्यवस्था के सभी पहलुओं मे सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले कारकों में से एक है। किसी भी देश की तरक्की देश के नागरिकों के शिक्षित होने पर भी प्रभावित होती है। शिक्षित व्यक्ति किसी भी कार्य को और अधिक अच्छे तरीके से कर सकता है। शाला संकुल व्यवस्था अच्छी शिक्षा के महत्वपूर्ण कारकों पर बेहतर प्रभाव डाल सकती है। क्लस्टर बनाने से उस क्लस्टर में उपलब्ध मानवीय एवं भौतिक संसाधनो का साझा उपयोग करते हुए विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराई जा सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इसकी चर्चा की गई है। इसमें संकुल प्रमुख की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। संकुल प्रमुख को अपने संकुल परिसर में आने वाली सभी शालाओं के विकास के लिए कार्य करना होगा। बच्चों के संज्ञानात्मक और सहसंज्ञानात्मक विकास के सभी पहलुओं पर चिन्तन करते हुए गतिविधियों के आयोजन की योजना बनानी चाहिए। हमारी शिक्षानीति देश के बच्चों को आत्मनिर्भर बनाना चाहती है। उनसे यह अपेक्षा रखती है कि वे समस्या समाधान के लिए तार्किक और रचनात्मक रूप से सोचना सीखें। शिक्षा रटंत प्रणाली पर निर्भर न हो करके सीखने की प्रवृत्ति पर निर्भर हो,क्योंकि मनुष्य उन चीजों को जल्दी सीखता है,जिसे करने की प्रक्रिया में वह स्वयं सम्मिलित होता है बाल केन्द्रित शिक्षा के माध्यम से सीखने के लिए आनन्दपूर्ण मनोरंजक वातावरण उपलब्ध कराया जाना चाहिए। नवाचारी गतिविधियों को प्राथमिकता दिया जाना चाहिए । पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त अन्य व्यवहारिक एवं विशेष ज्ञान से जोड़ने का प्रयास किया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों को विषय के साथ कई तरह की अन्य जानकारियाँ भी प्राप्त हो जाती हैं। जिनका उपयोग वे अपने जीवन में कर सकते हैं। पाठ्येतर गतिविधियों का आयोजन भी किया जाना चाहिए इससे शैक्षणिक माहौल को और अधिक समृद्ध तथा अनुशासित बनाया जा सकता है। सामुदायिक सहभागिता को महत्व दिया जाना चाहिए।

संदर्भ -

1. नई शिक्षा नीति 2020 शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ।
2. राज्य परियोजना कार्यालय,समग्र शिक्षा,छत्तीसगढ़, रायपुर द्वारा निर्मित संकुल प्राचार्य की डायरी।
3. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डीडीहाट पिथौरागढ़ उतराखण्ड का विद्यालय नेतृत्व के लिए प्रशिक्षण माड्यूल।